बचन

बचन : सबद के रूप के ऊ बिधान, जेकरा से ओकर अर्थ में संख्या के बोध हो हे, बचन कहलावऽ हे।

बचन ***दू प्रकार*** के होवऽ हे : एकबचन आउ बहुबचन।

एकबचन : सबद के जउन रूप से एगो संख्या के बोध होवे, ओकरा एकबचन कहल जा हे। **जइसे** : पेंड़, राजा, रानी, किताब आदि।

बहुबचन : सबद के जउन रूप से एगो से अधिक संख्या के समझ होवे, ओकरा बहुबचन कहल जा हे। **जइसे** : लइकन, घोड़वन, पेंड़वन।

एकबचन से बहुबचन बनावे के नियम :

1. एकबचन संग्या के अन्तिम दीर्घ स्वर के ह्रस्व करके 'न' जोड़े से बहुबचन के रूप बनऽ हे। **जइसे** :

एकबचन	**बहुबचन**
घोड़ा	घोड़न
घोड़वा	घोड़वन
बेटा	बेटन
बेटवा	बेटवन

2. एकबचन संग्या के मूल रूप में 'न' जोड़ के बहुबचन बनावल जा हे। **जइसे** :

एकबचन	**बहुबचन**
बैल	बैलन
घर	घरन

3. एकबचन संग्या के ह्रस्व स्वरान्त इया ब्यंजनान्त रूप के दीर्घ रूप में बदल के आउ ऊ दीर्घ रूप के अंन्त दीर्घ स्वर के ह्रस्व कर के 'न' जोड़ के एकबचन से बहुबचन रूप बनावल जा हे। **जइसे** :

एकबचन	बहुबचन
औरत	औरतियन
बैल	बैलवन
आम	अमवन
माला	मलवन

4. एकबचन में समूह निर्देसक संग्या 'सब' इया प्रानीधारी ला 'लोग' संजुक्त करके जौगिक बहुबचन के रूप बनावल जा हे। जइसे : घरसब, मालीलोग आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. मगही भासा में बचन केकरा कहल जा हे। एक-एक गो उदाहरन के साथ समझावऽ।
2. नीचे लिखल एकबचन के बहुबचन बनावऽ।

   बैल, औरत, आम, घर, माला, ताला ।

●

कारक

संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से वाक्य में अन्य सबद खासकर क्रिया के साथ ओकर संबंध परगट होवऽ हे, कारक कहला हे।

संग्या इया सर्बनाम के कारक रूप के परगट करे ला जउन प्रत्यय लगावल जा हे ओकर बिभक्ति, परसर्ग, अनुसर्ग इया कारक चिह्न कहला हे।

कारक ***आठ प्रकार*** के होवऽ हे।

कारक के चिन्ह :

कर्त्ता : एकरा में कोई परसर्ग के बेवहार न होवे।

कर्म : कें (बिना परसर्ग के भी कर्म कारक के बेवहार होवऽ हे)

करन : से, सें, सेती, सतीं

सम्प्रदान : के, ला, ले, लेल, लगी, लागी, खातिर बदे, वास्ते, ए

अपादान : से, सें, सेती, सतीं

सम्बन्ध : क, के, केर, केरा, केरी

अधिकरन : में, मे, मों, ने

सम्बोधन : अहो, एहो, अगे, एगे, गे, अजी, जी, अरे, ये, एबे, ए, बे, अबे, रे, हो

कारक के भेद :

1. **कर्त्ताकारक** : काम करे वाला के कर्त्ता कहल जा हे। सबद के जउन रूप से काम करे वाला के बोध होवऽ हे ऊ कर्त्ताकारक कहला हे। **जइसे : लइका** पढ़ रहल हे। इहाँ 'लइका' कर्त्ता कारक हे।

2. **कर्मकारक** : जउन सबद पर कर्त्ता के काम करे के फल पड़े ऊ कर्मकारक कहला हे। **जइसे :** लइका **किताब** पढ़ रहल हे।

इहाँ पढ़ रहल हे क्रिया के फल 'किताब' पर पड़इत हे, ई लेलं किताब कर्मकारक में हे।

3. **करनकारक** : जउन साधन से कर्त्ता कउनो काम करे ऊ कर्म कारक कहला हे। **जइसे : कलम** से लिखली।

इहाँ 'कलम से' करनकारक हे।

4. **सम्प्रदानकारक** : जेकरा ला क्रिया के काम कैल जाय ऊ सम्प्रदान कारक कहला हे। **जइसे : सफलता लागी** मेहनत करऽ।

इहाँ 'सफलता लागी' सम्प्रदानकारक में हे।

5. **अपादानकारक** : जउन सबद से संबंध टूटे इया अलग होवे के बोध होवे, अपादानकारक कहला हे।

जइसे : पेड़ से फर गिरल।

इहाँ 'पेड़ से' अपादानकारक हे।

6. **सम्बन्धकारक** : संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से दूसर वस्तु के साथ ओकर संबंध के बोध होवे, ऊ सम्बन्धकारक कहला हे। **जइसे :**

सीता के गहना ले आवऽ। इहाँ 'सीता के' संबंधकारक में हे।

7. **अधिकरनकारक** : संग्या इया सर्बनाम के जउन रूप से क्रिया के अधार के बोध होवे ऊ अधिकरनकारक कहला हे। **जइसे :**

स्कूल में लइकन पढ़ऽ हथ। इहाँ 'स्कूल में' अधिकरनकारक में हे।

8. **सम्बोधनकारक** : संग्या के जउन रूप से केकरो पुकारल इया धिरावल जाय ऊ सम्बोधन कारक कहला हे। **जइसे :**

हे बेटा ! आव। इहाँ 'हे बेटा' सम्बोधनकारक हे।

अभ्यास के प्रस्न

1. कारक केकरा कहल जा हे? एकर प्रकार चिन्ह् सहित उल्लेख करऽ।

●

सर्बनाम

सर्बनाम : सर्बनाम ऊ बिकारी सबद हे जे संग्या के बदले बेवहार में आवऽ हे। **जइसे** :

राम आवित हल तऽ **ओहू** खा लेइत।

इहाँ 'ओहू' सबद रामे ला परयोग कैल गेल हे। ई लेल ओहू सर्बनाम हे।

सर्बनाम के भेद :

सर्बनाम के ***छव*** भेद होवऽ हे :

1. पुरुसवाचक
2. निजवाचक
3. निस्चयवाचक
4. सम्बन्धवाचक
5. अनिस्चयवाचक
6. प्रस्नवाचक

1. **पुरुसवाचक सर्बनाम** : जउन सर्बनाम से पुरुष इया स्त्री (मर्द इया औरत) के बोध होवे ऊ पुरुसवाचक सर्बनाम कहलावऽ हे।

जइसे : हम, तूँ, ऊ आदि।

पुरुसवाचक सर्बनाम के ***तीन भेद*** होवऽ हे :

(क) **उत्तमपुरुस** : जेकरा से बोले वाला के बोध होवऽ हे, उत्तमपुरुष कहलावऽ हे। **जइसे** : हम, हमनी इत्यादि।

(ख) **मध्यमपुरुस** : जेकरा से सुने वाला के समझल जाय ऊ मध्यमपुरुस कहलावऽ हे। **जइसे** : तूँ, तों, तोहनी आदि।

(ग) **अन्यपुरुस** : जेकरा बारे में कुछ कहल जाए ओकरा **अन्यपुरुस** कहल जा हे। **जइसे** : ई, ऊ आदि।

2. **निजवाचक सर्बनाम** : जउन सर्बनाम से खुद अप्पन के समझ होवऽ हे ओकरा निजवाचक कहल जा हे। **जइसे** :

हम **अपनही** आ गेली। हम अपने खायम।

इहाँ 'अपने' आउ 'अपनहीं' निजवाचक सर्बनाम हे।

3. **निस्चयवाचक सर्बनाम** : जेकरा से कउनो भिरी इया दूर के कोई चीज के समझ होवे ऊ निस्चयवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे** : ई, ऊ

4. **अनिस्चयवाचक सर्बनाम** : जेकरा से कउनो अनिस्चित चीज के समझ होवे ऊ अनिस्चयवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे** : कउनो, कुछो

5. **सम्बन्धवाचक सर्बनाम** : जेकरा से कउनो वाक्य में दू पद के बीच संबंध बतावल जा हे ऊ संबंधवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे** : जे, जउन, से, तउन।

6. **प्रस्नवाचक सर्बनाम** : जेकरा से प्रस्न के बोध होवऽ हे ऊ प्रस्नवाचक सर्बनाम कहला हे। **जइसे** : का, के, कउन, कहाँ, केकरा आदि।

सर्बनाम रूपावली :

(अ) ***पुरुसवाचक*** : (i) उत्तमपुरुस – हम

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	**दीर्घ**	**ह्रस्व**	**दीर्घ**
कर्त्ता	मोरा	हम	हमनी	हमनिन
कर्म	मोरा, के	हमरा, के	हमनी, के	हमनिन के
करन	मोरा से	हमरा से	हमनी से	हमनिन से
सम्प्रदान	मोरा ला	हमरा ला	हमनी ला	हमनिन ला
अपादान	मोरा से	हमरा से	हमनी से	हमनिन से
सम्बन्ध	मोर, मोरा	हम्मर, हमार, हमरे, हमरा	हमनी के, केरा	हमनिन कें, केर
अधिकरन	मोरा में	हमरा में	हमनी में	हमनिन में

(ii) ***मध्यमपुरुस*** (अनादरवाचक) तूँ इया तों

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	**दीर्घ**	**ह्रस्व**	**दीर्घ**
कर्त्ता	तूँ, तों	तूँ, तों	तोहनी	तोहनिन
कर्म	तोरा, के	तोहरा, के	तोहनी, के	तोहनिन, के

	एकबचन		बहुबचन	
	हस्व	दीर्घ	हस्व	दीर्घ
करन	तोरा से	तोहरा से	तोहनी से	तोहनिन से
सम्प्रदान	तोरा ला	तोहरा ला	तोहनी ला	तोहनिन ला
अपादान	तोरा से	तोहरा से	तोहनी से	तोहनिन से
सम्बन्ध	तोरा, तोर, तोरी	तोहर, तोहार, तोहरे, तोहरी	तोहनी के, केर	तोहनिन के, केर
अधिकरन	तोरा में	तोहरा में	तोहनी में	तोहनिन में
सम्बोधन	हे तूँ, हे तों	हे तूँ, हे तों	हे तू सब लोग	हे तूँ सब, लोग

नोट : हमनिन आउ तोहनिन के जगह हमनिन्ह आउ तोहनिन्ह के भी परयोग होवऽ हे।

मध्यमपुरुष (आदरवाचक)– अपने

	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	अपने	अपने सब
कर्म	अपने के	अपने सब के
करन	अपने से	अपने सब से
सम्प्रदान	अपने ला	अपने सब ला
अपादान	अपने से	अपने सब से
सम्बन्ध	अपने के, अप्पन, आपन	अपने सब के
अधिकरन	अपने में	अपने सब में
सम्बोधन	हे अपने	हे अपने सब

नोट : अपने सब के जगह अपने सबन इया अपने सभन के परयोग भी कोई–कोई छेत्र में होवऽ हे।

(ii) *निस्चयवाचक सर्बनाम*–ई (निकटवर्ती)

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	ई	ई	ई	एकनी, इनकनी
कर्म	ऍह, ऍह के	एकरा के	इन्ह के	एकनी के, इनकनी के
करन	ऍह से	एकरा से	इनका से	एकनी से, इनकनी से
सम्प्रदान	ऍह ला	एकरा ला	इनका ला	एकनी ला, इनकनी ला
अपादान	ऍह से	एकरा से	इनका से	एकनी से, इनकनी से
सम्बन्ध	ऍह के, केर	एकर, एकरा एकरी	इनकर इनकरा	एकनी के, इनकनी के –केर
अधिकरन	ऍह में	एकरा में	इनकर में, एमें	एकनीं में इनकनी में

निस्चयवाचक सर्बनाम—'ऊ' (दूरवर्ती)

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	ऊ	ऊ	ऊ, ओकनी	उनकनी
कर्म	ओह के	ओकरा,–के	उन्ह के	उनकनी, के
करन	ओह से	ओकरा से	उनका से	उनकनी से
सम्प्रदान	ओह ला	ओकरा ला	उनका ला	उनकनी ला
अपादान	ओह से	ओकरा से	उनका से	उनकनी से
सम्बन्ध	ओह के केर आदि	ओकरा, रा,री	उनकर, रा	उनकनी के, केर
अधिकरन	ओह में	ओकरा में	उनका में	उनकनी में

(iv) *संबंधबाचक सर्बनाम*—'जे'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	जौन, जउन	जे	जे	जिनकनी, जिन्हकनी
सम्बन्ध	जेह के	जेकर, जेकरा, जेकरी	जिन्ह के	जिन्हकर जिन्हकरा जिन्हकरी
बिकारी	जेह	जेकरा	जिन्ह	जिन्हकरा

सम्बन्धवाचक सर्बनाम 'से'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	तऊन, तौन	से	से	तिनकनी,
संबंध	तेह के आदि	तेकर,		तिन्हकनी,
		तेकरा, तेकरी	तिन्ह के, आदि	तिन्हकर
				तिन्हकरा
				तिन्हकरी
बिकारी	तेह	तेकरा	तिन्ह	तिन्हकरा

(v) प्रस्नवाचक सर्बनाम—'के'

	एकबचन		बहुबचन	
	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ
कर्त्ता	के, कौन	के, को	के	किनकनी,
	कउन			किन्हकनी
सम्बन्ध	केह के,	केकर,	किन्हके	किन्हकर,
	आदि	केकरा, केकरी		किन्हकरा,
				किन्हकरी,
				किनकर
बिकारी	केह	केकरा	किन्ह	किन्हका

प्रस्नवाचक सर्बनाम—'का' इया 'की'

	एकबचन	
	पहिल रूप	दूसर रूप
कर्त्ता	का, की	कौची, कउची
कर्म	काहे के	कउची, कउची के
करन	काहे से	कौची से, कउची से
सम्प्रदान	काहे ला	कौची ला, कउची ला

	एकबचन	
	पहिल रूप	दूसर रूप
अपादान	काहे से	कौची से, कउची से
सम्बन्ध	काहे के, काहे केर केकरा,	कौची के कउची केर कौची केर, कउची के, कउची केर
अधिकरन	काहे में	कौची में कउची में

(vi) *अनिस्चयवाचक सर्बनाम*—'केऊ', कोई

	एकबचन	
	पहिला रूप	दूसरा रूप
कर्त्ता	केऊ, कोई	केहू
कर्म	केकरो के	कौनो के
करन	केकरो से	कौनो से
सम्प्रदान	केकरो ला	कौनो ला
अपादान	केकरो से	कौनो से
सम्बन्ध	केकरो	कौनो के
अधिकरन	केकरो में	कौनो में

अभ्यास के प्रस्न

1. सर्बनाम के परिभासा आउ एकर भेद के बरनन करऽ।
2. पुरुषवाचक के उत्तमपुरुस सर्बनाम में 'हम' के सभ्भे रूप लिखऽ।

बिसेसन

जउन बिकारी सबद संग्या इया सर्बनाम के बिसेसता बतलावऽ हे, ओकरा बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : सुत्थर लइका, सुत्थर लइकी, आदि।

बिसेसन जउन संग्या इया सर्बनाम पद के बिसेसता बतलावऽ हे, ओकरा बिसेस्य कहल जा हे। **जइसे** : करिया कुत्ता, लमहर साँप, हरियर पेंड़, नयकी कनिआँ, ललकी साग आदि।

इहाँ करिया, लमहर, हरिअर, नयकी आउ ललकी बिसेसन हे जबकि कुत्ता, साँप, पेंड़ कनिआँ आउ साग बिसेस्य हे।

बिसेसन ***तीन प्रकार*** के होवऽ हे :

1. सार्बनामिक बिसेसन
2. गुनवाचक बिसेसन
3. संख्यावाचक बिसेसन

1. **सार्बनामिक बिसेसन** : पुरूसवाचक आउ निजवाचक सर्बनाम के छोड़ के बाकी सब्भे सर्बनाम के बेवहार बिसेसन रूप में हो हे। एही से एकरा सार्बनामिक बिसेसन कहल जा हे। नीचे कुछ प्रमुख सार्बनामिक बिसेसन के उदाहरन देवल जाइत हे :

ई, ऊ, कोई, केउ, कुच्छो, कउन, का, की, जे, अप्पन, अनकर सब्भे सार्बनामिक बिसेसन हे।

2. **गुनवाचक बिसेसन** : जउन सबद से संग्या के गुन, दसा, सोभाव आदि लच्छित होवऽ हे, ओकरा गुनवाचक बिसेसन कहल जा हे। ई बड़ीमनी होवऽ हे। एकरा में मुख्य ई प्रकार से हे :

काल : नया, पुरान, टटका, बासी, अगिला, पिछला, जड़ीहन आदि।

स्थान : उजाड़, चौरस, पुरवइया, पछिया, बिहारी, बंगाली आदि।

आकार : गोल, तिनकोन, नोखदार, चरखूँट, छवपहल, सोझ, टेढ़, बकनरल आदि

रंग : लाल, पीयर, हरियर, उज्जर, धुँधुर, चमकउआ आदि

दसा : दुबर, पातर, मोट, गीला, सुक्खल, रोगी, फरहर, छरहर आदि

गुन : निमन, खराब, जबून, पापी, दानी, पढ़ाकू, आदि

गुनवाचक बिसेसन के ह्रस्व रूप से सामान्य संग्या के बिसेसता परगट होवऽ हे। **जइसे** : ऊ नया साड़ी पेन्हले हइ।

दीर्घ रूप से संग्या बिसेस के बिसेसता परगट होवऽ हई। **जइसे** : ऊ नयका साड़ी पेन्हले हइ।

3. संख्यावाचक बिसेसन : जउन सबद से संग्या इया सर्बनाम के संख्या लच्छित होवे, ओकरा संख्यावाचक बिससेन कहल जा हे। **जइसे** : चार घोडा, डेढ़ रुपइया, दोगुना दाम आदि।

संख्यावाचक बिसेसन के मुख्य रूप से ***तीन भेद*** हे :

(क) निस्चित संख्या वाचक

(ख) अनिस्चित संख्या वाचक

(ग) परिमान वाचक

(क) **निस्चितसंख्या वाचक बिसेसन** : निस्चितसंख्या वाचक से बस्तु के निस्चित संख्या के समझ होवऽ हे। एकर ***पाँच भेद*** हे :

(i) गननावाचक : एक, दू, तीन आदि

(ii) क्रमवाचक : पहिला, दूसरा, तीसरा आदि

(iii) आबृत्तिवाचक : दोगुना, तेगुना, चौगुना आदि

(iv) समुदायवाचक : दुन्नो, तीनो, चारो आदि

(v) प्रत्येकबोधक : हर, एक-एक, दू-दू आदि

गननावाचक बिसेसन भी दू तरह के होवऽ हे : पूर्नांक बोधक आउ अपूर्नांक बोधक। एक, दू, तीन आदि पूर्नांक बोधक के उदाहरन हे तो पाव, अधिया, सवाई आदि अपूर्नांक बोधक के।

आवृत्तिवाचक बिसेसन ला हर, हरा, हारा, बार, बेर, बेरी जोड़ल जा हे। **जइसे** : एकहर, एकहरा, एकहारा, एकबार, एकबेर, एकबेरी आदि

(ख) **अनिस्चितसंख्यावाचक बिसेसन** : जउन संख्या वाचक बिसेसन से निस्चित संख्या के बोध न होवे ओकरा अनिस्चितसंख्यावाचक बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : दूसर, सब, बहुत, लाखों, लाखन, हजारन, कइएक आदि।

(ग) **परिमानवाचक बिसेसन** :जउन बिसेसन से कउनो चीज के नाप इया तउल के बोध होवऽ हे ओकरा परिमानवाचक बिसेसन कहल जा हे। **जइसे** : आउ, सब्भे, समूचे, थोड़ा, जादे, पूरा आदि।

अभ्यास के प्रस्न

1. बिसेसन के परिभासा देइत एकर भेद के बरनन करऽ।
2. नीचे लिखल के चार-चार उदाहरन दऽ :

(क) कालवाचक बिसेसन	(ख) स्थानवाचक बिसेसन
(ग) आकारवाचक बिसेसन	(घ) रंगवाचक बिसेसन
(ङ) दसावाचक बिसेसन	(च) गुनवाचक बिसेसन
(छ) क्रमवाचक बिसेसन	(झ) आवृत्तिवाचक बिसेसन

क्रिया

जउन बिकारी सबद से कोई काम करे इया होवे के भाव परदरसित हो हे, क्रिया कहला हे। **जइसे** : हमनी सब **हँसऽ** ही।

इहाँ 'हँसऽ ही' सबद क्रिया हे काहे कि एकरा से 'हँसे' (हँसना) क्रिया के बोध हो हे।

क्रिया के भेद : रचना के दृस्टि से क्रिया के दू भेद हो हे:

(i) सकर्मक क्रिया (ii) अकर्मक क्रिया

(i) **सकर्मक क्रिया** : जउन क्रिया के फल कर्त्ता से निकल के कर्म पर पड़े अर्थात जेकरा में कर्म लगे ऊ सकर्मक क्रिया कहला हे। **जइसे** : सोहन गेंद 'फेंकऽ' हे।

इहाँ 'फेंकऽ हे' सकर्मक क्रिया हे काहे कि 'फेंके' (फेंकना) क्रिया के फल सोहन पर न पड़ के गेंद पर पड़ऽ हे।

(ii) **अकर्मक क्रिया** : जउन क्रिया करल इया होयल आउ आकर फल दुन्नो कर्त्ते (कर्त्ता पर ही) पड़े अर्थात् जेकरा में कर्म न लगे, ऊ अकर्मक क्रिया कहला हे। **जइसे** : लइकन दउड़ऽ हथ।

इहाँ, 'दउड़े' क्रिया के फल लइकन पर पड़ऽ हे।

(ख) ब्युत्पत्ति के दृस्टि से क्रिया के दू भेद हो हे :

(i) मूल क्रिया (ii) जौगिक क्रिया

(i) **मूल क्रिया** : मूल क्रिया ऊ हे जे मूल धातु से बनऽ हे। **जइसे** : जा से जाए (जाना) आ से आवे (आना) खा से खाए (खाना) आदि।

(ii) **जौगिक क्रिया** : जउन क्रिया मूल धातु से न बन के जौगिक धातु (दूसर धातु) से बनऽ हे, ऊ जौगिक क्रिया कहला हे। **जइसे** : देवे से दिआवे, खाए से खिआवे आदि।

जौगिक क्रिया के ***तीन भेद*** हे :

(i) प्रेरनार्थक क्रिया

(ii) नामधातु क्रिया

(iii) संजुक्त क्रिया ।

(i) **प्रेरनार्थक क्रिया** : जउन क्रिया के सम्पादन में कर्त्ता पर दूसर अदमी के प्रेरना समझल जाए, ऊ प्रेरनार्थक क्रिया कहला हे। अइसन क्रिया के कर्त्ता खुद कर्म न करके दूसरा के करे ला प्रेरित करऽ हे। **जइसे** : राम पेड़ कटवावऽ हे।

(ii) **नामधातु क्रिया** : जउन धातु (क्रिया) 'संग्या–बिसेसन पद' बनऽ हे, ऊ नाम धातु कहला हे। **जइसे** : 'बात' संग्या-पद से बतिआना, 'ठंढा' बिसेसन-पद से ठंढाना आदि।

(iii) **संजुक्त क्रिया** : दू इया दूगो से अधिक धातु के मेल से बने वाला क्रिया संजुक्त क्रिया कहला हे। **जइसे** : ऊ खा चुकल। ऊ जा चुकल।

क्रिया के वाच्य

वाच्य क्रिया के ऊ रूप के कहल जा हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया द्वारा कर्त्ता के बिसय में कुछ कहल गेल इया कर्म के बिसय में इया खाली भाव के बिसय में।

वाच्य के ***तीन प्रकार*** होवऽ हे :

(i) करतरी वाच्य (ii) कर्मवाच्य (iii) भाववाच्य

(i) **करतरीवाच्य** : करतरीवाच्य क्रिया के ऊ रूप के कहल जा हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्त्ता हे।

जइसे : पंडित पोथी 'बाँचऽ हथी'। लइकन दउड़ऽ हथ।

इहाँ 'बाँचऽ हथी' क्रिया पंडित के आउ 'दउड़ऽ हथ' क्रिया लइकन कर्त्ता के लिंग, बचन आउ पुरुस के अनुसार हे। करतरी वाच्य के क्रिया अकर्मक आउ सकर्मक दुन्नो हो हे।

(ii) **कर्मवाच्य** : क्रिया के ऊ रूप कर्मवाच्य कहला हे, जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्म हे।

जइसे : कपड़ा सियल जा हे। सनेस आजे भेजल गेलइ।

हमरा से ई भार न उठावल जायत।

इहाँ क्रिया के लिंग आउ बचन कर्म के लिंग आउ बचन के अनुसार हे। कर्मवाच्य के क्रिया सब्भे स्थिति में सकर्मक रहऽ हे।

(iii) **भाववाच्य** : क्रिया के ऊ रूप भाववाच्य कहला हे जेकरा से जानल जा हे कि क्रिया के उद्देस्य ओकर कर्त्ता इया कर्म न हे, बलुक खाली ओकर भाव हे। जइसे :

हमरा से बइठल न जतइ! धूप में चलल न जा हइ।

इहाँ कर्त्ता आउ कर्म के प्रधानता न हो के क्रिया के ही प्रधानता हे।

क्रिया के काल

क्रिया के काल : क्रिया के जउन रूप से समय के बोध हो हे, ऊ काल कहला हे।

काल के *तीन भेद* हो हे :

(i) बर्तमान काल (ii) भूतकाल (iii) भविस्यत काल

(i) **बर्तमान काल** : बर्तमान काल के क्रिया से चलइत समय के बोध होवऽ हे। **जइसे :**

हम फोटो देखऽ ही। तूँ दीदी के बोलावऽ हऽ।

किसान के खाय भेजल जा हइ।

(ii) **भूतकाल** : जउन क्रिया से बीतल समय के बोध होवऽ हे, ऊ भूतकाल के क्रिया कहला हे। **जइसे :**

हम तस्वीर देखली। तूँ दीदी के बोलैलऽ।

किसान के खाय भेजल गेलइ।

(iii) **भविस्यत काल** : जउन क्रिया से आवेवाला समय के सूचना मिलऽ हे, भविस्यत काल के क्रिया कहला हे। **जइसे :**

हम तस्वीर देखम। तू दीदी के बोलैबऽ। किसान के खाय भेजल जतइ।

क्रिया के पुरुस, लिंग आउ बचन

क्रिया के *तीन पुरुस* होवऽ हे :

(i) उत्तमपुरुस (ii) मध्यमपुरुस (iii) अन्यपुरुस

मगही भासा लिंग भेद के जटिलता से मुक्त होवऽ हे। एकरा में लिंग भेद के कारन कोई रूपान्तर न हो हे।

जइसे : मोहन पोथी पढ़ऽ हइ। राधा पोथी पढ़ऽ हइ।

इहाँ मोहन पुल्लिंग आउ राधा स्त्रीलिंग दुन्नो ला एके क्रिया 'पढ़ऽ हइ' आयल हे।

मगही में क्रिया में बचन भेद से भी रूपान्तर न होवऽ हे। **जइसे** :

राजा राज करऽ हथी। राजा सब राज करऽ हथी।

इहाँ पहिला वाक्य में 'राजा' एकबचन आउ दुसरका में 'राजा सब' बहुबचन में हे बाकि दुन्नो में एके क्रिया 'करऽ हथी' आयल हे।

कर्त्ता आउ कर्म के प्रति आदर भाव के अधार पर मगही भासा में क्रिया के रूपान्तर हो हे। ई लेल क्रिया के दू भेद हो जा हे: आदरवाचक आउ अनादर वाचक।

(कुछ लोग अनादरवाचक क्रिया के एकबचन आउ आदरवाचक क्रिया के बहुबचन के अन्तर्गत रखऽ हथ।) **जइसे** :

माली राजा के देखलकइन। माली नौकर के देखलकइ।

अभ्यास के प्रस्न

1. क्रिया के परिभासा दऽ आउ रचना के दृस्टि से क्रिया के भेद बतावऽ।
2. ब्युत्पत्ति के दृस्टि से क्रिया के भेद के बरनन करऽ।
3. वाच्य का हे? वाच्य के तीनो प्रकार पर प्रकास डालऽ।
4. क्रिया के काल कै गो होवऽ हे ? उदाहरण देके समझावऽ।

●

धातु-कोस

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
आ	अनई	आना
खा	खनई	खाना
गा	गनई	गाना
चू	चुनई	चूना
छा	छनई	छाना
जा	जनई	जाना
जी	जनई	जीना
ढा	ढोनई	ढोना
द	देनई	देना
धो	धोनई	धोना
पा	पनई	पाना
पी	पिनई	पीना
बा	बोनई	बोना
रो	रोनई	रोना
ल, ले	लेनई	लेना
ला	लनई	लाना
सी	सिनई	सीना
से	सेनई	सेना
हो	होनई	होना
अँचा	अँचनई	अँचाना
अँट	अँटनई	अँटना
अँइठ	अँइठनई	ऐंठना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
अँउट	अँउटनई	औंटना
अड़	अड़नई	अड़ना
अलग	अलगनई	अलगना
अलगा	अलगनई	अलगाना
आँक	अँकनई	आँकना
आँच	अँचनई	आँचना
उग	उगनई	उगना
उठ	उठनई	उठना
उड़	उड़नई	उड़ना
उब	उबनई	ऊबना
औंघ	औंघनई	ऊँघना
ओट	ओटनई	ओटना
ओढ़	ओढ़नई	ओढ़ना
कह	कहनई	कहना
कर	करनई	करना
कस	कसनई	कसना
काछ	कछनई	काछना
काट	कटनई	काटना
कात	कतनई	कातना
काढ़	कढ़नई	काढ़ना
कूट	कुटनई	कूटना
कूत	कुतनई	कूतना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
कूद	कुदनई	कूदना
कौंध	कौंधनई	कौंधना
कील	किलनई	कीलना
खप	खपनई	खपना
खिल	खिलनई	खिलना
खिया	खियनई	खियाना
खींच	खिंचनई	खींचना
खीझ	खिझनई	खीझना
खुल	खुलनई	खुलना
उग	उगनई	उगना
उब	उबनई	उबना
ओट	ओटनई	ओटना
खेल	खेलनई	खेलना
खोंस	खोंसनई	खोंसना
गढ़	गढ़नई	गढ़ना
गल	गलनई	गलना
गिर	गिरनई	गिरना
खेव	खेनई	खेना
चल	चलनई	चलना
चाह	चहनई	चाहना
चिप	चिपनई	चिपना
चाभ	चभनई	चिभना
चिब	चिबनई	चबाना
चूक	चुकनई	चूकना
चूम	चुमनई	चूमना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
चूम	चूमनई	चूमाना
टूट	टूटनई	टूटना
ढाह	ढहनई	ढाहना
ढोला	ढोलनई	ढुलना
तन	तननई	तनना
ताप	तपनई	तापना
तैर	तैरनई	तैरना
तोड़	तोड़नई	तोड़ना
थूक	थुकनई	थूकना
दब	दबनई	दबना
देख	देखनई	देखना
धर	धरनई	धरना
नचा	नचनई	नचाना
नट	नटनई	नटना
नपा	नपनई	नपना
नाथ	नथनई	नाथना
नट	नटनई	नटना
निरा	निरनई	निराना
पका	पकनई	पकाना
पच	पचनई	पचना
पढ़	पढ़नई	पढ़ना
पला	पलनई	पलना
पटा	पटनई	पटाना
पाल	पलनई	पालना
पिसा	पिसनई	पीसना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
पोंछ	पोंछनई	पोंछना
पोत	पोतनई	पोतना
फब	फबनई	फबना
फर	फरनई	फलना
फंस	फंसनई	फंसना
दुह	दुहनई	दुहना
फांक	फंकनई	फांकना
फाड़	फाड़नई	फाड़ना
फिर	फिरनई	फिरना
फींच	फिंचनई	फींचना
फुका	फुकनई	फुकना
फुला	फुलनई	फूलाना
बांच	बँचनई	बाँचना
छेक	छेकनई	छेंकना
छेड़	छेड़नई	छेड़ना
छेद	छेदनई	छेदना
छोड़	छोड़नई	छोड़ना
जग	जगनई	जागना
जड़	जड़नई	जड़ना
जप	जपनई	जपना
जम	जमनई	जमना
जर	जरनई	जलना
जीत	जितनई	जीतना
जुट	जुटनई	जुटना

धातु	मगही क्रिया	हिन्दी क्रिया
जुड़	जुड़नई	जुड़ना
जेम	जेमनई	जीमना
जोड़	जोड़नई	जोड़ना
जोत	जोतनई	जोतना
जोह	जोहनई	जोहना
झड़	झड़नई	झड़ना
झल	झलनई	झलना
झाँक	झँकनई	झाँकना
झुक	झुकनई	झूकना
झूम	झुमनई	झूमना
झूल	झूलनई	झूलना
झोंक	झोंकनई	झोंकना
टिक	टिकनई	टिकना
टिप	टिपनई	निसाना
टेक	टेकनई	टेकना
टेर	टेरनई	टेरना
टोक	टोकनई	टोकना
ठूँस	ठूँसनई	ठूँसना
ठग	ठगनई	ठगना
ठेक	ठेकनई	स्पर्श होना
डर	डरनई	डरना
डाँट	डँटनई	डाँटना
डाल	डलनई	डालना
डूब	डूबनई	डूबना

अव्यय

अव्यय ऊ सबद हे, जेकर रूप में लिंग, बचन, पुरुस आउ कारक के कारन कोई परिवर्तन न होय। **जइसे :** कल, बिहान, कम, जादे आदि।

अव्यय के ***चार भेद*** होवऽ हे :

(1) क्रियाबिसेसन

(2) सम्बन्धसूचक

(3) समुच्चयबोधक

(4) बिस्मयादिबोधक

(1) **क्रियाबिसेसन** : क्रियाबिसेसन ऊ अव्यय हे, जेकरा से क्रिया, बिसेसन इया क्रियाबिसेसन के बिसेसता के बोध होवे। **जइसे :**

(क) राम **गते–गते** चलऽ हे।

(ख) ऊ **बड़ी** निमन अभिनय करऽ हे।

इहाँ 'गते–गते' आउ 'बड़ी' क्रियाबिसेसन हे।

क्रियाबिसेसन के बर्गीकरन

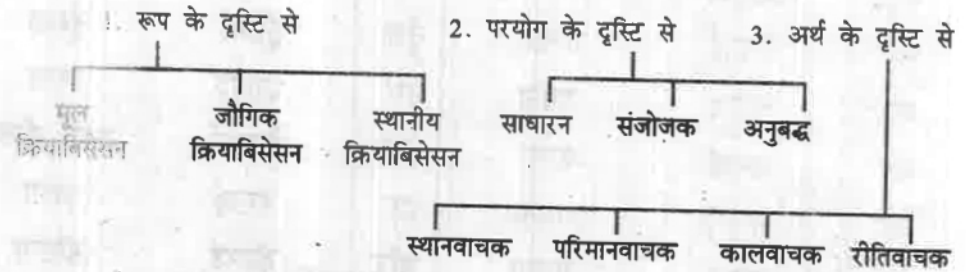

(1) **रूप के दृस्टि से क्रियाबिसेसन :**

(अ) अइसन क्रियाबिसेसन जउन दूसर सबद इया प्रत्यय के मेल से न बने, मूल क्रियाबिसेसन कहल जा हे।

जइसे : ठीक, दूर, भी, तऽ, फिन अदि।

(आ) अइसन क्रियाबिसेसन जउन कउनो दूसर सबद में प्रत्यय इया सबद जोड़े से बने; जौगिक क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :** मन से, चाल से, हाथे–हाथ आदि।

जौगिक क्रियाबिसेसन नीचे लिखल सबदन के मेल से बनऽ हे :

(क) दू अलग संग्या के जोग से : भीतर–बाहर, दिने–राते।

(ख) दू अलग क्रियाबिसेसन के जोग से : हिआँ–हुआँ, जखनी–तखनी, जने–तने।

(ग) संग्या के पुनरुक्ति से : हाथे–हाथ, घंटे–घंटे, घरे–घरे।

(घ) बिसेसन के पुनरुक्ति से : नीक–नीक, तनी–तनी, झूठ-झूठ, बेस–बेस, उरेहल–उरेहल।

(ङ) क्रियाबिसेसन के पुनरुक्ति से : आस्ते–आस्ते, जखनी–जखनी, जोर–जोर।

(च) दू क्रियाबिसेसन के बीच 'न' लगाके : कखनी–न–कखनी, कुछो-न-कुछो।

(छ) अनुकरनवाचक सबद के पुनरुक्ति से : पटापट, चटाचट, फटाफट, धड़ाधड़।

(ज) संग्या आउ बिसेसन के मेल से : हरघड़ी, एकेजोरे, दूतुरी।

(झ) अब्यय आउ दूसर सबद के जोग से : अनठेकान, अनजानल, अनसुनल।

(ञ) पूर्वकालिक कृदन्त आउ बिसेसन के जोग से:-थोड़ा करे, बिसेस करे।

(ट) अइसन क्रियाबिसेसन जे बिना रूप बदलले कोई खास जगह बेवहार में आवे, स्थानीय क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :**

तूँ **कपार** मत खा। हमनी बेकारे **माथा** कूटइत ही।

इहाँ 'कपार' आउ 'माथा' स्थानीय क्रियाबिसेसन हे।

(2) परयोग के दृस्टि से क्रियाबिसेसन :

(अ) जउन क्रियाबिसेसन वाक्य में स्वतंत्र रूप से बेवहार में आवऽ हे, सामान्य क्रियाबिसेसन कहला हे।

जइसे : तूँ **बहुत** बकऽ हऽ। ऊ **कन्ने** जाएत?

इहाँ 'बहुत' आउ 'कन्ने' सामान्य क्रियाबिसेसन हे।

(आ) जउन क्रियाबिसेसन कउनो उपवाक्य से जुड़ल रहऽ हे, संजोजक क्रियाबिसेसन कहला हे। **जइसे :**

जेन्ने जाय ला हवऽ, **ओन्ने** जा।

जेतना बघारलऽ, **ओतना** देखैलऽ नऽ।

इहाँ 'जन्ने' 'आउ' 'ओन्नें 'जेतना' आउ 'ओतना' संजोजक क्रियाबिसेसन हे।

(इ) जउन क्रियाबिसेसन के परयोग निस्चय के अर्थ में कउनो सबद भेद के साथ होवऽ हे, ओकरा अनुबद्ध क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :**

हम **ही** अइली हे।

हम **हूँ** बोल के रहम।

इहाँ 'ही' आउ 'हूँ' अनुबद्ध क्रियाबिसेसन हे।

(3) अर्थ के दृस्टि से क्रियाबिसेसन :

(अ) जउन क्रियाबिसेसन से स्थान के बोध होवे, ओकरा स्थानवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** हिआँ, हुँआ, जहाँ, कहाँ, आगु, अगाड़ी, पाछे, पछाड़ी, नगीचे, भीरे, भीरू, कन्ने, केन्ने, जन्ने, तन्ने आदि।

(आ) जउन क्रियाबिसेसन से परिमान के बोध होवऽ हे, परिमानवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** बेसी, कम, बड़ा, भारी, खूब, तन्नी, खाली, चाहे, एतना, ओतना, केतना, जेतना, तेतना, सेतना आदि।

(इ) जउन क्रियाबिसेसन से समय के बोध होवे, ओकरा कालवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे। **जइसे :** काल, काल्ह, बिहान, परसूँ, फिन, फिनु, फिरू, तुरते, भोरे, तड़के, अनमुनाहे, अबेर, कुबेर, सबेर, पहिले, पाछे, रोज, सब्भेदिन, घरी-घरी, बेर-बेर, संजोग आदि।

(ई) जउन क्रियाबिसेसन से प्रकार, निस्चय, अनिस्चय, स्वीकार, कारन, निसेध, अवधारना आदि के बोध होवे, रीतिवाचक क्रियाबिसेसन कहल जा हे।

जइसे : अइसे, कइसे, जइसे, तइसे, आस्ते-आस्ते, सच्चे, ठीक, नीमन, बेस, एकरा से, काहे कि, भर, तलक, तो, ही, मति, मतू, मत, न, नहीं, नई, ने आदि।

2. **सम्बन्धसूचक** : जउन अब्यय कोई संग्या जइसन बेवहरित सबद के बाद आ के ओकर सम्बन्ध वाक्य के दूसर सबद के साथ स्थापित करे, ओकरा सम्बम्धसूचक कहल जा हे। **जइसे** :

रात **तलक**, दिन **भर**, परिवार **समेत** आदि।

सम्बन्धसूचक अब्यय के बर्गीकरन तीन दृस्टि से कैल जा हे :

(क) प्रयोग (ख) अर्थ (ग) ब्युत्पत्ति

(क) प्रयोग के दृस्टि से एकर दू भेद होवऽ हे :

(i) **सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय** : अइसन अब्यय जेकर परयोग संग्या के बिभक्ति के बाद कैल जा हे, सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय कहला हे।

जइसे :

जानवर के **जइसन**, सन्तान के **बिना**, पियास के **मारे**।

(ii) इहाँ 'जइसन', 'बिना', 'मारे' सम्बद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय हे।

(ii) **अनुबद्ध सम्बन्धसूचक अब्यय** : अइसन अब्यय के परयोग संग्या के बिकृत रूप के बाद हो हे। **जइसे** : थरिया भर भात, बेटिया लागी दामाद इहाँ 'भर' आउ 'लागी' अनुबद्ध सम्बन्धसूचक हे।

(ख) अर्थ के दृस्टि से सम्बन्धसूचक अब्यय के नीचे लिखल भेद होवऽ हे :

कालसूचक	:	पहिले, पीछू, बाद।
दिसासूचक	:	तरफ, पार, ओर।
स्थानसूचक	:	नीच, ऊपर, भीतर, बाहर।
साधनसूचक	:	सहारे, जरिए।
हेतुसूचक	:	ला, लेल, कारन।
बिसयसूचक	:	लेखे, मद्धे।
भिन्नतासूचक	:	बिनु, अलावा।
बिनिमयसूचक	:	जगह, बदले।
सादृस्यसूचक	:	नियर, जकत, ऐसन, सन, नाईं।

बिरोधसूचक : उलटे, खिलाफ

सहजोगसूचक : संग, साथ, समेत

संग्रहसूचक : तलक, भर, लौं

तुलनासूचक : आगे, सामने, बनिस्पत

(ग) ब्युत्पत्ति के दृस्टि से सम्बन्धसूचक अब्यय के नीचे लिखल भेद होवऽ हे :

(i) मूल सम्बन्धसूचक : तलक, तक, बिनू, समेत

(ii) जौगिक सम्बन्धसूचक :

संग्या से : लेखे, ओर, लेल, ले, बदे

बिसेसन से : सन, नियर, नियन, समान, ऐसन

क्रियाबिसेसन से : नीचे, ऊपर, पास, पाछे, तरे

क्रिया से : मारे, जाने, करके आदि।

3. **समुच्चयबोधक** : जउन अब्यय दू इया अधिक वाक्य के जोड़े इया अलगे करे, ओकरा समुच्चयबोधक कहल जा हे। **जइसे :**

सचिन **आउ** राहुल खेलइत हथ।

हम जइती **बाकि** बीमार पड़ गेली।

इहाँ 'आउ', 'बाकि' दुन्नो समुच्चयबोधक अब्यय हे।

समुच्चयबोधक अब्यय के दू भेद होवऽ हे :

(क) समानाधिकरन (ख) ब्यधिकरन

(क) **समानाधिकरन** : मुख्य वाक्य आउ उपवाक्य के जोड़े वाला अब्यय के समानाधिकरन अब्यय कहल जा हे। एकर चार भेद हे :

(i) **संजोजक** : एकरा से दू सबद, उपवाक्य इया वाक्य के सामान्य जोग के पता चलऽ हे। **जइसे :** सोहन के रोटी पसंद हे **आउ** मोहन के भात।

संजोजक अब्यय के उदाहरन : आउ, एवं, व, भी, आ, ओ, औ, आउ आदि।

(ii) **बियोजक** : एकरा से दू इया दू से अधिक सबद, उपवाक्य इया वाक्य में से कोई एक के ग्रहन इया त्याग के बोध होवऽ हे।

जइसे : राधा **इया** मोहन नाचत।

बियोजक अब्यय के उदाहरन : चाहे, इया, या, वा, अथवा, न कि।

(iii) **बिरोधदर्सक** : ई अब्यय दू उपवाक्य इया वाक्य में बिरोध इया असमानता देखावइत कोई एक उपवाक्य इया वाक्य के ग्रहन इया बोध करावऽ हे। **जइसे** :

हम अइली **बाकि** तूँ न अयलऽ।

बिरोधदर्सक अब्यय के उदाहरन : बाकि, पर, तइयो।

(iv) **फलदर्सक** : एकरा से पता चलऽ हे कि अगिला वाक्य के अर्थ पिछिला वाक्य के अर्थ के फल हे। **जइसे** :

हम न गेली, **एकरा चलते** ऊ ऐलन।

फल दर्सक अब्यय के उदाहरन : से, ई लेल, इहे गुने आदि।

(ख) **ब्यधिकरन** : जउन समुच्चयबोधक अब्यय एक इया एक से अधिक उपवाक्य के मुख्य वाक्य से जोड़ऽ हे, ब्यधिकरन कहला हे।

एकर ***चार भेद*** हे :

(i) **उद्देस्यदर्सक** : अइसन समुच्चयबोधक के बाद आवे वाला वाक्य पहिले के उद्देस्य बतावऽ हे। **जइसे** : तूँ ओकर पच्छ में गवाही दे दऽ, **जेकरा से** ऊ छूट जाए।

प्रमुख उद्देस्य दर्सक हे : जेकरा से, जेकि, ताकि

(ii) **संकेतदर्सक** : ई समुच्चयबोधक से जे दूगो वाक्य जोड़ल जा हे, ओकरा में एक के संकेत दूसर में पावल जा हे। **जइसे** :

जे मेहनत करबऽ, तऽ सफलता मिलबे करत।

संकेतदर्सक के उदाहरन : जे, जदि, अगर, चाहे, तो आदि

(iii) **स्वरूपदर्सक** : अइसन अब्यय से दू जुड़ल वाक्य इया सबद में पहिला वाक्य इया सबद के स्वरूप बादवाला से स्पस्ट हो जा हे। **जइसे** : डर हे **'कि'** कहीं ऊ चल नऽ जाए।

स्वरूपदर्सक के उदाहरन : कि, यानि, जइसे, मानो, अर्थात् ।

(iv) **कारनवाचक अब्यय** : एकरा से कारन के पता चलऽ हे। **जइसे** : ऊ सूत गेल **काहे कि** ओकर मन खराब हल। कारनवाचक अब्यय के **उदाहरन** : काहे कि, जेकि, इसलिए कि।

4. **बिस्मयादिबोधक** : अइसन अब्यय जेकरा से, सोक, आस्चरज आदि मन के भाव परगट होवे ओकरा बिस्मयादिबोधक अब्यय कहल जा हे। **जइसे** : ओह, ठीक, बेस, छिः आदि।

बिस्मयादि बोधक के प्रमुख भेद नीचे लिखल हे :

(i) **हर्सबोधक** : अहा!, वाह!, आहा!, खूब!

(ii) **अचरजबोधक** : बाप रे!, अरे! हैं! ऐं! का!

(iii) **सोकबोधक** : आह!, उह!, बाप रे!, मइया गे!, हाय राम!

(iv) **तिरस्कारसूचक** : हट!, दूर्!, छिह!, चुप!

(v) **स्वीकारबोधक** : हाँ!, बेस!, जी!, ठीक!

(vi) **अनुमोदनबोधक** : ठीक!, वाह!, सबास!, अच्छा!

(vii) **पुरुस के संबोधनसूचक** : अरे!, अहो!, अजी!, रे!

(viii) **स्त्री के संबोधनसूचक** : गे!, अगे!, अहे!, अहो!, अजी!

अभ्यास के प्रस्न

1. अब्यय केकरा कहल जा हे? एकर भेद बतावऽ।
2. क्रियाबिसेसन केकरा कहल जा हे? एकर बर्गीकरन करऽ।
3. संबंधसूचक केकरा कहल जा हे? संबंधसूचक अब्यय के बर्गीकरन करऽ।
4. समुच्चयबोधक केकरा कहल जा हे? एकर भेद के बरनन करऽ।
5. बिस्मयादिबोधक केकरा कहल जा हे? एकर प्रमुख भेद के उदाहरन दऽ।